साहित्योत्सव में विचारों के योद्धाओं के अनुभव

जनसत्ता संवाददाता
नई दिल्ली, 30 जनवरी।

'ये सभी लेखक हमारी भाषाई एकता और विचारों की ताकत के योद्धा हैं जो अपनी-अपनी तरह से अपनी-अपनीं लड़ाइयां लड़ रहे हैं।' साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने साहित्योत्सव में अकादेमी द्वारा 2018 के लिए पुरस्कृत साहित्यकारों के लिए ये बातें कहीं। अपने उपन्यास 'पोस्ट बॉक्स 203 नाला सोपारा' की रचना प्रक्रिया पर चित्रा मुद्गल ने कहा, 'कुछ रचनाकारों की कुछ कृतियां उनके अपराध-बोध की संतानें होती हैं। मैं यह उपन्यास लिख लेने के बाद उस अपराध-बोध से मुक्त नहीं हो पाई हूं, जिससे मुक्ति की कामना में मुझसे यह उपन्यास लिखवाया। हाशिए पर दलित और स्त्रियों को भी कुछ-न-कुछ अधिकार उपलब्ध हैं लेकिन ट्रांसजेंडर लोगों को अभी भी हमने तिरस्कृत कर मानवीय रूप में जीने के अधिकार तक छीने हुए हैं'।

गुजराती के लिए पुरस्कृत शरीफा बिजलीवाल ने भारत विभाजन संबंधी साहित्य के बारे में कहा कि इनको पढ़कर ऐसा लगा कि इसके केंद्र में वह आम आदमी है जिसे हिंदुत्सान-पाकिस्तान, गुलामी-आजादी से कुछ लेना-देना नहीं था। फिर भी वही अपनी जड़ों से उखड़ गया। मैथिली भाषा के लिए पुरस्कृत वीणा ठाकुर ने कहा कि मेरे कहानी संग्रह परिणीता के ज्यादातर पात्र विषमताओं से पैदा हुए आक्रोश, आर्थिक दुश्चिंतता और सामाजिक नैतिकता से संबंधित समस्याओं के शिकार जान पड़ते हैं। राजस्थानी लेखक राजेश कुमार व्यास ने बताया कि कविता हमेशा नई दृष्टि देती है। संस्कृत लेखक रमाकांत शुक्ल ने बताया कि उनकी पुस्तक मम जननी की पहली कविता उन्होंने अपनी मां के बारे में लिखी हैं। कार्यक्रम का संचालन अनुपम तिवारी ने कहा।

विराट वैभव
नई दिल्ली, बृहस्पतिवार, 31 जनवरी 2019

दिल्ली वैभव

साहित्योत्सव में अकादेमी पुरस्कार विजेता हुए सम्मानित

वैभव न्यूज ■ नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी की ओर से आयोजित किए जा रहे साहित्योत्सव में साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2018 के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। यह पुरस्कार अर्पण समारोह कमानी सभागार में आयोजित किया गया। प्रख्यात ओड़िया लेखक और साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य मनोज दास समारोह के मुख्य अतिथि थे। जबकि, प्रख्यात श्रीलंकाई लेखक और साहित्य अकादेमी के प्रेमचंद फेलोशिप से सम्मानित सांतन अय्यातुरै समारोह के विशिष्ट अतिथि। ये पुरस्कार साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार द्वारा प्रदान किए गए। पुरस्कृत लेखक थे सनन्त तांति, (असमिया), संजीव चट्टोपाध्याय (बाङ्ला), रितुराज बसुमतारी (बोडो), इन्दरजीत केसर (डोगरी), शरीफा विजलीवाला (गुजराती), चित्रा मुद्गल (हिंदी), के जी नागराजप्प (कन्नड़), मुश्ताक अहमद मुश्ताक (कश्मीरी), परेश नरेंद्र कामत (कोंकणी), वीणा ठाकुर (मैथिली), एम. रमेशन नायर (मलयालम), बुधिचंद्र हैस्नांबा (मणिपुरी), मधुकर सुदाम पाटील (मराठी), लोकनाथ उपाध्याय चापागाई (नेपाली), मोहनजीत सिंह (पंजाबी), राजेश कुमार व्यास (राजस्थानी), रमाकांत शुक्ल (संस्कृत), श्याम बेसरा (संताली), खीमन यू. मूलाणी (सिंधी), एस. रामकृष्णन (तमिल), कोलकलूरि इनाक (तेलुगु) व रहमान अब्बास (उर्दू)। समारोह में अंग्रेजी व ओड़िया के पुरस्कृत लेखकों को छोड़कर सभी रचनाकारों को साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष द्वारा सम्मानित किया गया। सम्मान में ताम्रफलक और एक लाख रुपए की राशि का चेक भेंट किया गया।

आयोजन

साहित्योत्सव में पुरस्कृत लेखकों ने साझा किए अपने लेखन के रचनात्मक अनुभव

साहित्य द्वारा परिवर्तन की आहिंसक प्रक्रिया संभव : तिवारी

नई दिल्ली, 30 जनवरी (देशबन्धु)। साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित किए जा रहे साहित्योत्सव के तीसरे दिन आज लेखक-सम्मिलन कार्यक्रम के तहत साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2018 के विजेताओं ने पाठकों के सामने अपने लेखन के रचनात्मक अनुभवों को साझा किया। डोगरी के लिए पुरस्कृत लेखक इन्दरजीत केसर ने कहा कि मेरे हर उपन्यास में आतंकवाद से होनेवाले विनाश का उल्लेख है लेकिन सामान्यता मेरे अधिकतर उपन्यास नारी प्रधान है जिनमें नारी के मनोविज्ञान और मनोस्थिति के बारे में लिखा जाता है। गुजराती के लिए पुरस्कृत शरीफा विजलीवाला ने कहा कि मेरे पिताजी अखबार बेचते थे इसलिए तरह-तरह की पत्रिकाएं और किताबें पढ़ने को मिल जाती थीं। वहीं से पढ़ने की आदत हुई और इसी पढ़ने की आदत के कारण मैंने अनुवाद भी करना शुरू किया। पढ़ते समय मुझे जो कुछ भी अच्छा लगता मैं उसका गुजराती अनुवाद तुरंत करना चाहती थी। भारत विभाजन संबंधी साहित्य के नजदीक आने के बाद मैंने विभाजन से संबंधित सारा साहित्य पढ़ा और इनको पढ़कर ऐसा लगा कि इसके केंद्र में वह आम आदमी है जिसे हिंदुस्तान-पाकिस्तान, गुलामी-आजादी से कुछ लेना-देना नहीं था। फिर भी वही घर से बेघर हुआ, वतन से बेवतन हुआ और अपनी जड़ों से उखड गया। हिंदी के लिए पुरस्कृत चित्रा मुद्गल ने कहा कि कुछ लेखकों की कृतियां उसके अपराध बोध की संतानें होती हैं। मैं यह स्वीकार करती हूं कि पोस्ट बॉक्स 203 नाला सोपारा लिख लेने के बाद भी मैं उस

पूर्वोत्तरी कार्यक्रम और अनवुाद की चुनौतियां एवं समाधान पर हुई परिचर्चा

अपराध बोध से मुक्त नहीं हो पाई हूं जिससे मुक्ति की कामना ने मुझसे यह उपन्यास लिखवाया। मैथिली भाषा में पुरस्कृत लेखिका वीणा ठाकुर ने कहा कि मेरी पुरस्कृत रचना कहानी-संग्रह परिणीता समकालीन समाज, संस्कृति एवं मानवीय मूल्यों का ऐसा दस्तावेज है जिसमें आधुनिक जीवन-शैली का व्यापक और सटीक चित्रण किया गया है। इस कथा-संग्रह के अधिकांश पात्र मध्यम वर्गीय हैं तथा वर्तमान विषमताओं से उत्पन्न आक्रोश आर्थिक दुश्चिन्ता एवं सामाजिक नैतिकता से संबंधित समस्याओं के शिकार जान पड़ते हैं। राजस्थानी लेखक राजेश कुमार व्यास ने बताया कि कविता हमेशा एक नई दृष्टि देती है। यात्राएं केवल भौगोलिक ही नहीं बल्कि अंतर्मन की भी होती है। बचपन के संस्कारों से मुझे पद रचना को प्रेरित किया और आगे चलकर यही मेरी अभिव्यक्ति का साधन बने। संस्कृत लेखक रमाकांत शुक्ल ने बताया कि उनकी पुरस्कृत पुस्तक मम जननी एक काव्य संग्रह है और उसकी पहली कविता उन्होंने अपनी मां के बारे में लिखी है। इस काव्य संग्रह में 25 कविताएं सम्मिलित हैं जो सुनामी की भयंकरता भारत की विडंबनात्मक स्थिति आदि को प्रस्तुत करती है। अन्य पुरस्कृत लेखकों- सनन्त तांति, (असमिया), रितुराज बसुमतारी (बोडो), के.जी. नागराजप्प (कन्नड), मुश्ताक़ अहमद मुश्ताक़ (कश्मीरी), परेश नरेंद्र कामत (कोंकणी), एम. रमेशन नायर (मलयालम), बुधिचंद्र हैस्नांबा (मणिपुरी), मधुकर सुदाम पाटील (मराठी), लोकनाथ उपाध्याय चापागाईं (नेपाली), रमाकांत शुक्ल (संस्कृत), श्याम बेसरा (संताली), खीमन यू. मूलाणी (सिंधी), एस. रामकृष्णन (तमिल), कोलकलूरि इनाक् (तेलुगु) एवं रहमान अब्बास (उर्दू) ने भी अपने-अपने विचार श्रोताओं से साझा किए। कार्यक्रम के अध्यक्ष साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने अपने भाषण में कहा कि यह सभी लेखक हमारी भाषाई एकता और विचारों की ताकत के योद्धा हैं जो अपनी-अपनी तरह से अपनी-अपनी लड़ाइयां लड़ रहे हैं। कार्यक्रम का संचालन हिंदी संपादक अनुपम तिवारी ने किया।

लोगों तक साहित्य की पहुंच से हिंसा घटेगी

नई दिल्ली | वरिष्ठ संवाददाता

आज का समय व्यापक हिंसा का समय है। मेरा मानना है कि इस दौर में लोगों तक साहित्य को पहुंचा दिया जाए तो इसमें निश्चित रूप से कमी आएगी। यह बातें हिंदी कवि, समालोचक व साहित्य अकादेमी के पूर्व अध्यक्ष विश्वनाथ तिवारी ने बुधवार को साहित्योत्सव के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम में कहीं।

उत्तर-पूर्व और उत्तरी लेखकों के सम्मेलन पूर्वोत्तरी का उद्घाटन करते हुए तिवारी ने कहा कि दुनिया की कोई भाषा न किसी से बड़ी होती है न किसी से छोटी। जिस परिवेश की भाषा होती है वही उस परिवेश का सबसे उपयुक्त चित्रण कर सकती है। उसका हू-ब-हू अनुवाद होना संभव नहीं है। उन्होंने कहा कि भूमंडलीकरण के कारण एकरूपता का जो बुखार चढ़ा है उसमें कई भाषाएं सत्ता व ताकत की भाषाएं हो गई हैं। हम लेखकों को जागरूक होकर चुनौतियों का सामना करना होगा।

अपराध बोध से मुक्त नहीं हो पाई हूं : चित्रा मुद्गल

साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त करने के बाद बुधवार को लेखिका चित्रा मुद्गल मीडिया से मुखातिब हुईं। साहित्योत्सव में अपनी रचना पोस्ट बॉक्स 203, नाला सोपारा के संदर्भ में उन्होंने कहा, जिस मुक्ति की कामना ने मुझसे यह उपन्यास लिखवाया गया, उसे लिख लेने के बाद भी मैं अपराध बोध से मुक्त नहीं हो पाई हूं। मैं इस कलंक से मुक्त होना चाहती हूं। इसके लिए दुआ करिए।

साहित्य द्वारा परिवर्तन की आहिंसक प्रक्रिया संभव : विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

हमारे संवाददाता

नई दिल्ली। साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित किए जा रहे साहित्योत्सव के तीसरे दिन आज लेखक-सम्मिलन कार्यक्रम के तहत साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2018 के विजेताओं ने पाठकों के सामने अपने लेखन के रचनात्मक अनुभवों को साझा किया। डोगरी के लिए पुरस्कृत लेखक इन्दरजीत केसर ने कहा कि मेरे हर उपन्यास में आतंकवाद से होनेवाले विनाश का उल्लेख है लेकिन सामान्यता मेरे अधिकतर उपन्यास नारी प्रधान है जिनमें नारी के मनोविज्ञान और मनोस्थिति के बारे में लिखा जाता है।

गुजराती के लिए पुरस्कृत शरीफा विजलीवाला ने कहा कि 'मेरे पिताजी अखबार बेचते थे इसलिए तरह-तरह की पत्रिकाएँ और किताबें पढने को मिल जाती थीं। वहीं से पढने की आदत हुई और इसी पढने की आदत के कारण मैंने अनुवाद भी करना शुरू किया। पढते समय मुझे जो कुछ भी अच्छा लगता मै उसका गुजराती अनुवाद तुरंत करना चाहती थी। भारत विभाजन संबधी साहित्य के नजदीक आने के बाद मैंने विभाजन से संबंधित सारा साहित्य पढा और इनको पढकर ऐसा लगा कि इसके केंद्र में वह आम आदमी है जिसे हिंदुस्तान-पाकिस्तान, गुलामी-आजादी से कुछ लेना-देना नहीं था। फिर भी वही घर से बेघर हुआ, वतन से बेवतन हुआ और अपनी जडों से उखड गया।

हिंदी के लिए पुरस्कृत चित्रा मुद्गल ने अपने वक्तव्य में कहा कि कुछ लेखकों की कुछ कृतियाँ उसके अपराध बोध की संतानें होती है। दरअसल ऐसी कृतियों के जन्म का स्रोत सृजनकार की अंतश्चेतना में अनायास, अनामंत्रित आसमाया, सदियों-सदियों से किया जा रहा वह अपराध होता है जो उसके वंशजों द्वारा किया गया होता है और उसी अपराध की विरासत को ढोता हुआ वह नहीं जानता कि समाज के कलंक को ढोने वाला, स्वयं के माथे पर उस कलंक को चिपकाए हुए जी रहा है। मै यह स्वीकार करती हूँ कि पोस्ट बॉक्स 203 नाला सोपारा लिख लेने के बाद भी मै उस अपराध बोध से मुक्त नहीं हो पाई हूँ जिससे मुक्ति की कामना ने मुझसे यह उपन्यास लिखवाया।

मैथिली भाषा में पुरस्कृत लेखिका वीणा ठाकुर ने कहा कि मेरी पुरस्कृत रचना कहानी-संग्रह परिणीता समकालीन समाज, संस्कृति एवं मानवीय मूल्यों का ऐसा दस्तावेज है जिसमें आधुनिक जीवन-शैली का व्यापक और सटीक चित्रण किया गया है। इस कथा-संग्रह के अधिकांश पात्र मध्यम वर्गीय है तथा वर्तमान विषमताओं से उत्पन्न आक्रोश आर्थिक दुश्चिन्ता एवं सामाजिक नैतिकता से संबंधित समस्याओं के शिकार जान पडते है। राजस्थानी लेखक राजेश कुमार व्यास ने बताया कि कविता हमेशा एक नई दृष्टि देती है। यात्राएँ केवल भौगोलिक ही नहीं बल्कि अंतर्मन की भी होती है। बचपन के संस्कारों से मुझे पद रचना को प्रेरित किया और आगे चलकर यही मेरी अभिव्यक्ति का साधन बने। संस्कृत लेखक रमाकांत शुक्ल ने बताया कि उनकी पुरस्कृत पुस्तक मम जननी एक काव्य संग्रह है और उसकी पहली कविता उन्होंने अपनी माँ के बारे में लिखी है। इस काव्य संग्रह में 25 कविताएँ सम्मिलित है जो सुनामी की भयंकरता भारत की विडंबनात्मक स्थिति आदि को प्रस्तुत करती है।

अन्य पुरस्कृत लेखकों - मनन तांति, (असमिया), रितुराज बसुमतारी (बोडो), के.जी. नागराजप्प (कन्नड), मुश्ताक अहमद मुश्ताक (कश्मीरी), परेश नरेंद्र कामत (कोंकणी), एम. रमेशन नायर (मलयाळम्), बुधिचंद्र हैस्नांबा (मणिपुरी), मधुकर सुदाम पाटील (मराठी), लोकनाथ उपाध्याय चापागाईं (नेपाली), रमाकांत शुक्ल (संस्कृत), श्याम बेसरा (संताली), खीमन यू. मूलाणी (सिंधी), एस. रामकृष्णन (तमिळ), कोलकलूरि इनाक् (तेलुगु) एवं रहमान अब्बास (उर्दू) ने भी अपने-अपने विचार श्रोताओं से साझा किए। कार्यक्रम के अध्यक्ष साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने अपने भाषण में कहा कि यह सभी लेखक हमारी भाषाई एकता और विचारों की ताकत के योद्धा हैं जो अपनी-अपनी तरह से अपनी-अपनी लडाईयाँ लड रहे है।

कार्यक्रम का संचालन हिंदी संपादक अनुपम तिवारी ने किया। पूर्वोत्तरी कार्यक्रम के अंतर्गत उत्तर-पूर्व और उत्तरी लेखक सम्मिलन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन भाषण देते हुए प्रख्यात हिंदी कवि एवं समालोचक एवं साहित्य अकादेमी के पूर्व अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा आज का समय व्यापक हिंसा का समय है और मेरा यह विश्वास है कि अगर साहित्य को जनता तक पहुँचा दिया जाए तो यह हिंसा निश्चित रूप से कम होगी। साहित्य द्वारा परिवर्तन की आहिंसक प्रक्रिया संभव है। आगे उन्होंने कहा कि दुनिया की कोई भाषा न किसी से बडी होती है न किसी से छोटी। जिस परिवेश की भाषा होती है उस परिवेश का सबसे उपयुक्त चित्रण वही भाषा कर सकती है और उसका हू-ब-हू अनुवाद होना संभव नहीं है। भूमंडलीकरण के कारण एकरूपता का जो बुखार चढा है उसमें कई भाषाएँ सत्ता और पावर की भाषाएँ हो गई है। हम लेखकों को जागरूक होकर ऐसी चुनौतियों का सामना करना होगा, नहीं तो बहुत-सी भाषाएँ खत्म हो जाएँगी। विशिष्ट अतिथि ध्रुव ज्योति बोरा ने कहा कि यह समय झूठी खबरों का है और सत्य एक सत्य नहीं रहा है हर किसी का सत्य उसके लिए अलग-अलग है और इस कारण प्रेस और लेखकों आदि की स्वतंत्रता बाधित हुई है। लेखकों के सामने सबसे बडी चुनौती यही है कि वे एक सच्ची दुनिया को तैयार करें।

चित्रा मुद्गल और वीणा ठाकुर को मिला अकादमी पुरस्कार

विस, नई दिल्ली : साहित्य अकादमी के 'साहित्योत्सव' के दूसरे दिन साहित्य अकादमी पुरस्कार 2018 के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। पुरस्कार पाने वालों में हिंदी में चित्रा मुद्गल और मैथिली में वीणा ठाकुर शामिल है। वीणा ठाकुर मैथिली कथाकार और अनुवादक हैं। बिहार के दरभंगा की वीणा ठाकुर फिलहाल ललित नारायण मिथिला यूनिवर्सिटी में मैथिली विभाग की अध्यक्ष हैं। पहले इन्हें मिथिला विभूति सम्मान सहित अन्य सम्मान मिल चुका है।

बिहार के दरभंगा की वीणा ठाकुर फिलहाल ललित नारायण मिथिला यूनिवर्सिटी में मैथिली विभाग की अध्यक्ष हैं

। इनके अलावा सनन्त तांति (असमिया), संजीव चट्टोपाध्याय (बाङ्ला), रितुराज बसुमतारी (बोडो), इन्दरजीत केसर (डोगरी), शरीफा विजलीवाला (गुजराती), के.जी. नागराजप्प (कन्नड), मुश्ताक़ अहमद मुश्ताक़ (कश्मीरी), परेश नरेंद्र कामत (कोंकणी), एम. रमेशन नायर (मलयालम), बुधिचंद्र हैस्नांबा (मणिपुरी),मधुकर सुदाम पाटील (मराठी), लोकनाथ उपाध्याय चापागाईं (नेपाली), मोहनजीत सिंह (पंजाबी), राजेश कुमार व्यास (राजस्थानी), रमाकांत शुक्ल (संस्कृत), श्याम बेसरा (संताली), खीमन यू. मूलाणी (सिंधी), एस. रामकृष्णन (तमिल), कोलकलूरि इनाक् (तेलुगु), रहमान अब्बास (उर्दू)भी इस सम्मान से नवाजे गए। सम्मान में ताम्रफलक और एक लाख रुपये की राशि का चेक भेंट किया गया। प्रख्यात उड़िया लेखक और साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य मनोज दास मुख्य अतिथि थे और श्रीलंकाई लेखक औरसाहित्य अकादेमी के प्रेमचंद फेलोशिप से सम्मानित सांतन अय्यातुरै विशिष्ट अतिथि। समारोह में अंग्रेज़ी और ओड़िया के पुरस्कृत लेखकों को छोड़कर सभी रचनाकारों को साहित्य अकादमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने सम्मानित किया। अंग्रेज़ी एवं ओड़िया के लेखक अस्वस्थ्यता के कारण यह सम्मान ग्रहण नहीं कर सके।